thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15
सृष्टि संवत् 1960853115
विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com (दूरभाष : 01262-216222) सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 11 अंक : 33 रोहतक, 28 जनवरी, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

आर्यसमाज और इसके पतितोद्धारक कार्य

❑ मनमोहन कुमार आर्य

पराधीन भारत में एक गुजराती जन्मना व कर्मणा ब्राह्मण महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा 10 अप्रैल, सन् 1875 को मुम्बई के काकड़वाड़ी स्थान पर प्रथम आर्यसमाज की स्थापना विगत 5,000 वर्षों में एक सर्वतोमहान क्रान्ति के सूत्रपात का ऐतिहासिक दिवस है। हमें देश में ऐसी कोई संस्था या आन्दोलन विगत 5,000 वर्षों में दिखाई नहीं देता जिसने प्राणिमात्र की समस्याओं के मूल स्वरूप व उनके हितों को गम्भीरता से समझा हो जो हमारे देश में विद्यमान रही हैं। महर्षि दयानन्द और आर्य समाज ने देश की छोटी व बड़ी सभी समस्याओं को समझा ही नहीं अपितु इनके समाधान का सुस्पष्ट विधान भी प्रस्तुत किया। आर्यसमाज के इस प्राणिमात्र के हितकारी कार्यों का प्रायः सभी मत-मतान्तरों व इतर समाकालीन व भावी संगठनों ने अपने अज्ञान व निहित स्वार्थों के कारण विरोध ही किया। आज भी स्थिति यही है। आर्यसमाज की विचारधारा का आधार ईश्वरीय ज्ञान वेद पर आधारित होने के कारण, जो कि पूर्णरूपेण सत्य पर स्थित है, इस कारण यह संस्था अपने गुणों, ईश्वर की कृपा और इसके निष्ठावान सेनानियों के तप व त्याग के कारण फलती फूलती आ रही है। आज कई क्षेत्रों में देश ने आशातीत सफलतायें प्राप्त की हैं। इस स्थिति में यह भी सत्य है कि धार्मिक जगत में हम शताब्दियों पूर्व जहां थे शायद उससे भी पीछे गये हैं। इसका कारण है कि अवैज्ञानिक व अन्धविश्वासों पर आधारित मतों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। ऐसा लगता है कि आज आधुनिक काल में भी अधिकांश लोग जिनमें उच्च शिक्षित लोग भी सम्मिलित है, धर्म के वास्तविक अर्थ व महत्व से अपरिचित हैं या फिर वह अपने अज्ञान व स्वार्थों के

मनमोहन कुमार आर्य

एक प्रेरणाप्रद घटना

कारण सत्य को स्वीकार करना नहीं चाहते और अनावश्यक विरोध करते हैं। महर्षि दयानन्द ने उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में आर्य समाज की स्थापना कर जो समग्र सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक वैचारिक क्रान्ति की थी उसे हम वेदों पर आधारित सर्वांगीण क्रान्ति का नाम दे सकते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य तो देश व संसार से सभी प्रकार के अज्ञान को मिटाना था जो कि उन्नति में सबसे बड़ा बाधक होता है। अज्ञान मिटाने से सभी प्रकार के अन्धविश्वासों व कुरीतियों पर स्वयमेव विराम लगता है। आज हमारे पास धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं अन्य सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित पूर्ण ज्ञान उपलब्ध है। यह ज्ञान महाभारत काल व उसके कुछ वर्षों बाद विलुप्त हो गया था जो महर्षि दयानन्द के प्रयासों एवं उनके द्वारा स्थापित आन्दोलनात्मक संगठन आर्य समाज के त्याग व तपस्या तथा बलिदान की भावनाओं के कारण आज सर्वत्र विद्यमान है। महर्षि दयानन्द की सबसे बड़ी खोज यह थी कि क्या ईश्वर ने सृष्टि के बनाने के बाद कोई ज्ञान मनुष्यों के हितार्थ दिया था या नहीं? महर्षि दयानन्द की खोज व अन्वेषण से यह सिद्ध हुआ कि ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा के माध्यम से आदिकाल व भावी पीढ़ियों के लिए चार वेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का ज्ञान दिया था। वेद क्या हैं? वेद मनुष्य को अपना जीवन ज्ञान-विज्ञान के आधार पर व्यतीत करने वाली सब सत्य मान्यताओं एवं सिद्धान्ताओं का समुच्चय व संहितायें हैं। वेदों का अनुयायी व जानकार ही सच्चा जीवन व्यतीत करता व कर सकता है। अन्य बन्धु जो वेद के ज्ञान से अनभिज्ञ हैं, उनका जीवन परमार्थ के नाममात्र तथा स्वार्थ पर ही अवलम्बित होता है। यदि कोई वेदों का जानकार भी स्वार्थ में फंसकर बुरा काम करता है तो उसमें वेद का कसूर नहीं है अपितु उस व्यक्ति की अपनी कमियां हैं। महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर विश्व के मनुष्य समाज का जीवन सफल व सुखमय बनाने के लिए मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, वेदविरूद्ध ईश्वर उपासना पूजा पद्धति का विरोध, छुआछूत का विरोध, शिक्षा का स्त्री व शूद्रों सहित सबको समान अधिकार का समर्थन, सती प्रथा-बेमेल विवाह का विरोध तथा गुण-कर्म-स्वभावानुसार उचित आयु में युवक-युवतियों के विवाह आदि का प्रचार किया। विधवा विवाह का भी अनेक परिस्थितियों एवं आपद-धर्म के रूप में समर्थन किया। उन्होंने सर्वप्रथम दलितोद्धार व पतितोद्धार की मजबूत नींव भी डाली। इस दिशा में आर्य

शेष पृष्ठ 2 पर....

thearyasamaj.org

आर्यसमाज और इसके पतितो... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

समाज ने जो कार्य किया है वह अन्य किसी ने नहीं किया है।

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की केवल स्थापना ही नहीं की अपितु उन्होंने वेद के आधार पर मानव जाति की समग्र उन्नति का प्रयास अपने सदुपदेशों, प्रवचनों व व्याख्यानों, शास्त्रार्थों तथा सत्यार्थ प्रकाश आदि अनेक ग्रन्थों के लेखन व प्रकाशन द्वारा किया। वह प्रातः 3 बजे ही निद्रा त्याग कर उठ जाते थे और अपनी वेदसम्मत दिनचर्या आरम्भ कर देते थे। दिन का एक-एक क्षण वह अपने उद्देश्य की पूर्ति में लगाते थे और रात्रि 10 बजे शयन करते थे। उनका शयन भी एक प्रकार का ईश्वर का ध्यान ही हुआ करता था। उनकी वेशभूषा में एकमात्र एक कौपीन होता था। दिसम्बर-जनवरी-फरवरी की शीत व शिशिर ऋतु में भी वह बिना छत के किसी नदी के किनारे सिरहाने ईंटें लगाकर या फिर अन्यत्र एकान्त स्थान पर रहा करते थे। उनके जैसा तप, त्याग व पुरुषार्थ इतिहास में प्रसिद्ध किसी महापुरुष मे नहीं पाया जाता। वह अपूर्व ऐतिहासिक महापुरुष थे तथा उनकी अपने गुणों में किसी महापुरुष से समानता नहीं है। इस प्रकार से एक दिन के 24 घंटों में से उन्होंने 18 घंटे काम कर पुरुषार्थ की पराकाष्ठा का कीर्तिमान स्थापित किया। उन्होंने सन् 1875 में आर्यसमाज की स्थापना से 30 अक्तूबर, 1883 को अपने देहत्याग-मृत्युपर्यन्त के 8 वर्ष 6-7 महीनों में अभूतपूर्व कार्य किये। वह सत्य व ज्ञान के प्रचारार्थ देश के अधिकांश भागों में पदयात्रा व उन दिनों के असुविधापूर्ण साधनों द्वारा पहुंचे और लोगों को अपनी वाणी से सत्य के मूलस्वरूप से परिचित कराया जिससे समाज के धार्मिक दृष्टि से जागृत व निःस्वार्थ भावना के लोग उनके अनुयायी ही नहीं बने अपितु उन्होंने नानाविध देश और समाज की सेवा की।

दलितों एवं पतितों के उद्धार के लिए आर्य समाज ने उल्लेखनीय सेवा की है जो कि इतिहास की वस्तु है। उनसे पूर्व जिन स्त्री व शूद्रों को वेद का शब्द बोलने पर जघन्य दण्ड दिया जाता था, आर्यसमाज के द्वारा उनको वेदों का ऐसा विद्वान बनाया गया जिनके समकक्ष विद्वान महाभारत काल के बाद स्वयं को सनातनी कहने वाले पौराणिक बन्धु स्वयं में ही न तो उत्पन्न कर सके और न ही उनकी विचारधारा व मान्यताओं के आधार पर ऐसा होना सम्भव है। इस प्रसंग में हम आर्यसमाज से जुड़ी पतितोद्धार की एक प्रेरणादायक घटना प्रस्तुत करते हैं।

सन् 1964 में आर्य जगत् के अबोहर-पंजाब के प्रसिद्ध विद्वान प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु शोलापुर से आर्यसमाज, यादगिरी-गुलबर्गा के निमन्त्रण पर इसके रजत जयन्ती समारोह में भाग लेने पहुंचे। यादगिरी पहुंचकर आप श्री रामचन्द्र जी वर्मा प्रधान, आर्यसमाज से मिलने सुरपुर जाने वाली बस में सवार हुए। यह बस यात्रियों से पूरी तरह से भरी हुई थी जिसमें खड़ा होना भी कठिन था। बस में एक विचित्र घटना घटी जिसका वर्णन जिज्ञासुजी ने अपने संस्मरणो में किया है। जिज्ञासु जी को किसी ने पुकारा, ''पण्डित जी ! आइये, यहां बैठिये।'' हैदराबाद में आर्यसमाज के विद्वानों को पण्डित जी कहकर ही पुकारने की परम्परा है। जिज्ञासु जी ने बस में चारों ओर देखा, परन्तु उसमें कोई भी आर्य विद्वान दिखाई नहीं दिया। आवाज दोबारा सुनाई दी। अब उन्होंने देखा कि एक युवक उन्हें बुला रहा है। वह उसके समीप गये। उस अज्ञात युवक की सज्जनता देखकर जिज्ञासुजी आश्चर्य में पड़ गये। अपनी सीट छोड़ते हुए, उसने जिज्ञासुजी को बैठने के लिए कहा। जिज्ञासु जी ने उसका धन्यवाद किया और उसे अपनी सीट पर ही बैठे रहने के लिए कहा। वह उस युवक को पहचानते नहीं थे। उसका धन्यवाद करना और सीट न लेना ही उस समय उनका कर्तव्य था जो कि उन्होंने किया। युवक जिज्ञासु जी की स्थिति को समझ गया। उसने कहा, ''आप तो मुझे नहीं जानते परन्तु मैं आपको जानता हूं। आप पहले भी हमारे नगर के आर्यसमाज के प्रधान श्री रामचन्द्र जी वर्मा के पास आये थे, तब मैंने आपको देखा था और आपके प्रवचन सुने थे।'' उस भरी बस में एक और बात कहकर उसने जिज्ञासु जी व बस के यात्रियों को चौंका दिया। वह युवक बोला, ''मैं वेश्या का पुत्र हूं। हमारे नगर में देवदासियों की कन्याएं वेश्या बनती हैं। वर्मा जी की कृपा दृष्टि मुझ पर पड़ी। आपने मुझे प्रेरित किया, सम्भाला और पढ़ने की प्रेरणा दी। मैं उनकी कृपा से अध्यापक बन गया। मेरा परिवार अब उस कीचड़ वा दलदल से निकल गया है। मेरी बहिनों के भी विवाह हो गये। यह सब आपके रामचन्द्र जी वर्मा की कृपा का फल है।''

जिज्ञासु जी उस युवक की भरी बस में कही इन बातों को सुनकर व उसके साहस को देखकर भौच्चके रह गये। कोई व्यक्ति कभी अपनी कमजोरी का सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित नहीं करता? जिज्ञासु जी लिखते हैं कि ''उसकी बातें सुनकर मेरा सीना गर्व से फूल गया कि मैं वेदोद्धारक, देश सुधारक और बाल ब्रह्मचारी ऋषि दयानन्द का शिष्य हूं जिसने प्राणवीर पं. लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी से लेकर श्री रामचन्द्र वर्मा तक सैकड़ों दिलचले व दीन सेवक पैदा किये। श्री रामचन्द्र जी वर्मा ने उसको पढ़ने की ही प्रेरणा नहीं दी, उसे रामचन्द्र जी आदि सज्जनों के सहयोग से सर्विस भी मिल गई। उस युवक की बहिनों का भी उद्धार हो गया। पतितोद्धार की तो मैंने अनेक कहानियां सुनीं व पढ़ी हैं परन्तु बस में घटी इस घटना सदृश कोई घटना कभी सुनने पढ़ने को नहीं मिली। किसी पतित का बहिष्कार व तिरस्कार तो हर कोई कर सकता है परन्तु गिरे हुओं को उठाना तो कोई विरले मनुष्य ही कर सकते हैं। इसी का नाम परोपकार है। यही मनुजता है। यही धर्म का सार है।''

इस एक घटना से ही आर्य समाज के अन्य देश-समाज हितकारी कार्यों का अनुमान किया जा सकता है। हम संक्षेप में यह भी बताना चाहते हैं कि समय-समय आर्य पर समाज में मुस्लिम मत के लोग भी शामिल हुए और आर्य समाज में अपना उच्च स्थान बनाया। इन विभूतियों में स्वामी विज्ञानानन्द जी और स्वामी सत्यपति जी का नाम लिया जा सकता है।

आर्य समाज के गुरुकुलों में दलित वर्ग के बड़ी संख्या में लोगों ने शिक्षा पाई और अनेक वेदों के विद्वान, वेदों के भाष्यकार, भजनोपदेशक व आर्यसमाज के अधिकारी व प्रचारक बने। हमारी मित्रमण्डली में भी अनेक मित्र दलित परिवारों से रहे हैं व हैं जिनका सामाजिक स्तर काफी उन्नत हुआ। दलित पतितोद्धार के साथ आर्यसमाज ने समाज के अनेक व्यक्तियों को फर्श से उठाकर अर्श पर पहुंचाया है। किसी गांव में एक भेड़-बकरी चराने वाले बालक को गुरुकुल में पढ़ाकर उसे न केवल विद्वान ही बनाया अपितु वह आर्यों की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान भी बने। संन्यास लेकर वह सभी के पूज्य भी बने। आज पौराणिकों में संन्यास का अधिकार केवल ब्राह्मण जन्मना लोगों को ही है जबकि आर्य समाज में कोई भी योग्य विद्वान संन्यास ग्रहण कर समाज व देश सेवा कर सकता है। इस दृष्टि से भी आर्य समाज सच्चा पारसमणि पत्थर सिद्ध होता है जो साधारण अशिक्षित व संस्कारहीन लोगों को भी महनीय-स्वर्णमय जीवन का धनी बना देता है।

लेख को विराम देते हुए हम पाठकों से जीवन की उच्चाइयों को प्राप्त करने के लिए आर्य समाज का साहित्य मुख्यतः सत्यार्थ प्रकाश, महर्षि दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन चरित और आर्य समाज का इतिहास पढ़ने की प्रेरणा करेंगे। आर्यसमाज के विचारों को अपनाकर ही देश का कल्याण व उद्धार हो सकता है। इसके लिए हमें वेदों का अध्ययन कर वेदानुसार ही अपना आचरण बनाना होगा। ऐसा करके ही देश राम-राज्य बन सकता है। अन्य कोई मार्ग देश को सुदृढ़ व अखण्ड बनने तथा उन्नति पर ले जाने नहीं है। वैदिक राज्य ही सुराज व राम-राज्य से अलंकृत हो सकता है।

196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

भव्य वार्षिकोत्सव सम्पन्न

रोहतक। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी वैदिक योगाश्रम भऊ आर्यपुर रोहतक का वार्षिक उत्सव 13-14 जनवरी 2015 को बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में बृहद् यज्ञ व युवा तथा संस्कृति सम्मेलन सम्पन्न हुए। ब्र० रांजसिंह शास्त्री श्री सुरेन्द्र शास्त्री की व्यवस्था में यज्ञ में अनेक श्रद्धावान् यजमानों से यज्ञ सम्पन्न हुए। यज्ञ में घृत, सामग्री तथा वस्त्रादि दानियों द्वारा प्रदान किये गये। श्री दलवीर बल्हारा द्वारा निर्मित कक्ष का उद्घाटन भी किया गया। कार्यक्रम में गोशाला में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे मेडिकल डॉक्टर भी उपस्थित थे।

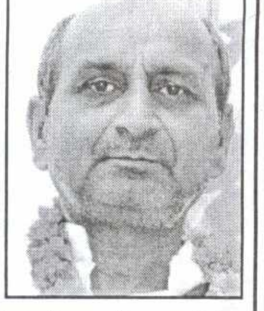

महान् कर्मयोगी **स्वामी सर्वानन्द जी महाराज** दयानन्दमठ दीनानगर (पंजाब) की **पावन-कथा** के लेखक **श्री सुरेन्द्र कुमार 'सरस'** को 5100/- रुपये, शॉल तथा फूल-मालाओं द्वारा सम्मानित किया गया। 'सरस' जी काफी लम्बे समय से इस क्षेत्र में सक्रिय कार्य कर रहे हैं। इससे पहले इन्होंने महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज तथा कर्मयोगी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती सहित अनेक महापुरुषों के जीवन से सम्बन्धित काव्यों का निर्माण किया है। इस कार्यक्रम में दिल्ली, गुड़गाँव, झज्जर, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार, जीन्द, पानीपत व सोनीपत से आर्यजन उपस्थित हुए। तत्पश्चात् प्रीति भोज का भी आयोजन किया गया तथा शान्तिपाठ के पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। **—राहुल आर्य भऊ आर्यपुर (रोहतक)**

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

मैं जीवन मुक्त हो गया हूँ

-: वेद-मन्त्र :-

गर्भे नु सन्नन्वेषामवेदमहं देवानां जनिमानि विश्वा।
शतं मा पुर आयसीररक्षन्नध श्येनो जवसा निरदीयम्॥

(ऋ० 4.27.1)

अर्थ—(अहम्) मुझ योगी ने (गर्भेनु सन्) गर्भावस्था में मैं किस प्रकार [उल्व से आवृत्त] था यह ध्यान योग से (अनु अवेदम्) जान लिया है और (विश्वा) समस्त (देवानाम्) पञ्चभूतों की (जनिमानि) उत्पत्ति को भी जान लिया है (मा) मुझे (शतम्) बहुत सारी (आयसीः पुरः) लौह के समान सुदृढ़ योनियों में रहना पड़ा इसका भी ज्ञान हो गया है। (अधः) अब मैं (श्येनः) प्रशंसनीय गतिवाला हो (जवसा) शीघ्र ही (निरदीयम्) जैसे बाज अपने घोसले से उड़ जाता है, वैसे ही इस शरीर को त्याग मुक्त हो जाऊँगा।

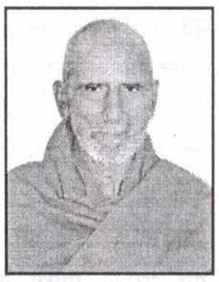

अहो! आज मैं धन्य हो गया। प्रातःकाल ध्यानावस्था में मैंने निश्चय किया कि महर्षि पतञ्जलि ने योगदर्शन के विभूति पाद में कहा है—**संस्कार साक्षात् करणात् पूर्व जाति ज्ञानम्** (योग० 3.18) धारणा, ध्यान, समाधिजन्य संयम के सिद्ध होने पर साधक यदि अपने संस्कारों का साक्षात्कार करे तो उसे जन्म-जन्मान्तर का ज्ञान हो जाता है। आज मैंने इन तीनों का अभ्यास किया और जब संयम की स्थिति अर्थात् चित्तवृत्ति का सर्वथा निरोध हो गया तब मैंने चित्तभूमि में संचित जन्म-जन्मान्तरों के संस्कारों पर मन को एकाग्र किया तो सारा दृश्य किसी चलचित्र से कम नहीं था। आप जानना चाहें तो सुनो—

गर्भे नु सन्नन्वेषामवेदहम्—मैं किसी माता के गर्भ में नीचे को शिर, ऊपर को पैर किये हुये एक अन्धेरी कोठरी में पड़ा हुआ हूँ। मेरे एक ओर मल तथा दूसरी ओर मूत्र की नाली बह रही है। स्थान न्यून होने से मेरे हाथ पैर सुकड़े हुये हैं। मैं इस तंग स्थान में छटपटा रहा हूं और उस सर्वनियन्ता से कह रहा हूँ—हे प्रभो! मुझे यह किस कर्म का दण्ड दिया जा रहा है? प्रभु ने उत्तर दिया—यह तुम्हारे किये हुये कर्मो क ा ही फल है जो जन्म-जन्मान्तर से मिलता चला आ रहा है। जरा आगे चलकर देखो, तुम्हें पूर्व के सैकड़ों जन्मों का रहस्य भी समझ में आ जायेगा।

क्रमशः अगले अंक में.....

शहीद ऊधमसिंह को भावभीनी श्रद्धांजलि

आर्यसमाज मन्दिर, जवाहर नगर, पलवल में शहीद ऊधमसिंह का बलिदान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का आरम्भ यज्ञ के अथर्ववेद के मन्त्र पाठ से किया गया। मुख्य यजमान कार्यकारी प्रधान सतीश आर्य थे। यज्ञ ब्रह्मा व मुख्य वक्ता श्री देशराज शुक्ल ने शहीद ऊधमसिंह के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि जलियां वाला बाग के मुख्य अत्याचारी अंग्रेज आरोपी जनरल डायर को इंगलैण्ड में स्थित इंडिया हाउस में जाकर अपनी पिस्तौल से मौत के घाट उतारकर अमृतसर के जलियां वाला बाग का बदला ले लिया। श्री तीर्थदास रहेजा ने यजमान को आशीर्वाद दिया।

मरते हैं रोशन, बिस्मिल, लाहिड़ी, अशफाक अत्याचार से।
होंगे सैकड़ों पैदा, इनकी रुधिर की धार से।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री नारायणदास विरमानी व संचालक प्रधान जयप्रकाश आर्य ने किया। **वतन के वास्ते मरना वतन के वास्ते जीना** भजन प्रधाना सत्या चौधरी ने सुनाया। कैलाश, सत्य तनेजा, शन्नो कुकड़ेजा, पुष्पा सचदेवा, डॉ. प्रेम, लक्ष्मी, आनन्द, अरविंद, भारत मदान, रवि चौधरी आदि उपस्थित थे।

—जयप्रकाश आर्य

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 07206865945 पर सूचना दें। धन्यवाद। —व्यवस्थापक

उदार हृदय थे ब्रह्मचारी राजसिंह

प्राचीन विद्वानों ने कहा है—'होनहार बिरवान के होत चिकने पात।' अर्थात् अच्छे पौधे के पत्ते चिकने होते हैं। इसका भावार्थ है कि महान् पुरुषों के लक्षण बालकपन में ही दिख जाते हैं। महान् व्यक्तियों की विशेषताएं पहले से ही दीखने लगती है, ऐसे ही व्यक्ति थे ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य।

मैं उन्हें सन् 1970 से जानता था। उनके हृदय में देश धर्म जाति की सेवा करने की भावना प्रबल थी। श्री अनिल आर्य, ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य तथा मेरा भतीजा वेदप्रकाश आर्य ये तीनों आर्य युवक परिषद् में कन्धे से कन्धा मिलाकर बड़े उत्साह व लग्न से कार्य करते थे। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली तथा पंडित बाल दिवाकर हंस इनका देशसेवा का कार्य देखकर बहुत खुश होते थे। पूरे भारत में ये त्रिमूर्ति आर्यसमाज का कार्य करने के लिए प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी थी।

अचानक आर्य युवक राजसिंह आर्य के मन में किसी साथी के परामर्श के कारण फिल्मों में कार्य करने की चाह जगी और वे बम्बई चले गए। जब यह समाचार स्वामी आनन्दबोध जी तथा पंडित बाल दिवाकर हंस को मिला तो उन्हें भारी दुःख हुआ। उन्हीं दिनों मैं अपनी काव्य रचना देने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली गया। मैंने स्वामी आनन्द बोध जी व आर्यनेता पंडित बाल दिवाकर हंस को अभिवादन किया। मुझे देखते ही दोनों नेताओं ने आह भरते हुए कहा—"अरे पण्डित नन्दलाल जी! अच्छा हुआ आप आ गये। आपको एक काम करना है, आप किसी तरह राजसिंह आर्य को दिल्ली बुलाओ और उन्हें आर्यवीर दल का कार्य करने के लिए तैयार करो।"

मैंने दोनों आर्य नेताओं को आश्वासन दिया कि मैं पूरा यत्न करूँगा। मैंने उसके बाद राजसिंह जी को यह समाचार दिया, फलस्वरूप वे मेरी बात मान गए और दिल्ली आकर आर्यवीर दल का कार्य जोर-शोर से करने लगे। थोड़े ही दिनों में उन्होंने पूरे देश में आर्य वीर दल की ख्याति फैला दी। पंडित बाल दिवाकर हंस उन्हें चन्द्रशेखर कहकर बहुत खुश होते थे। वे व्यवहार कुशल, उदार हृदय, विनम्रशील व निर्भीक युवक थे। वे अपने से बड़ों का का पूरा सम्मान करते थे। मैं जब कभी उनसे मिलता था तो खड़े होकर अभिवादन करते थे। बराबर वालों व अपने छोटों से प्यार करना उनकी अच्छी आदत थी।

सन् 1996 में आर्यसमाज टैगोर गार्डन दिल्ली का वार्षिक उत्सव था। पंडित शिवकुमार शास्त्री मंत्री केन्द्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, डॉ० महेश विद्यालंकार, आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री मौजूद थे। उस समय मैं भी उपस्थित था। श्री मल्होत्रा जी मंच संचालक से उसी समय श्री राजसिंह जी ने उन्हें सलाह दी कि "पण्डित नन्दलाल निर्भय जी उच्चकोटि के कवि लेखक और गायक हैं, इसलिए इन्हें सबसे अन्त में बुलाया जाये तो अच्छा रहेगा।" मल्होत्रा जी ने ऐसा ही किया था। आर्यसमाज सैक्टर-7 फरीदाबाद के वार्षिक उत्सव पर भी उन्होंने आर्यसमाज के मंत्री श्री बलवीरसिंह मलिक से कहकर मुझे अन्त में बुलवाया था। एक बार आर्यसमाज नगीना मेवात (हरयाणा) में उनकी वेदकथा चल रही थी। एक दिन मैं भी उनसे मिलने चला गया। परिणाम स्वरूप वहाँ भी मुझे बोलने का समय दिलाया था।

ऐसे विद्वान् नेता उपदेशक आर्यजगत् में बहुत थोड़े हैं, जो अन्य उपदेशकों, भजनोपदेशकों का सम्मान करते हैं। वे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा हनुमान रोड के लगभग 6 वर्ष प्रधान रहे। इस दौरान उनका व्यवहार आर्यजनों के प्रति अति उत्तम एवं प्रशंसनीय रहा। अगर यह प्रवृत्ति सभी आर्य विद्वानों अर्थात् आर्य नेताओं में आ जाए तो विश्व का कल्याण हो जाए। वस्तुतः वे सच्चे आर्य थे। उनकी कथनी और करनी एक थी। वे आचार्य बलदेव जी महाराज के सच्चे भक्त थे। अन्त में मेरी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि—

हे भगवन् जगत् के स्वामी, दया करो तुम दया करो।
दूर करो पाखण्ड जगत से, अविद्यारूपी तिमिर हरो॥
नेता भेजो राजसिंह से, जो वैदिक प्रचार करें।
श्रेष्ठजनों का मान करें जो, दुष्टजनों से नहीं डरें॥
जिससे यह ऋषियों का भारत, गुरु जगत का बन जाए।
राम कृष्ण जैसे नेता हों, कष्ट नहीं कोई पाए॥

—पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक, आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

theaaryasamaj.org

दुःख के अन्तस् से जन्मा आनन्द

❑ डॉ. देवव्रत आचार्य, प्राचार्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

जिन्दगी आँसुओं का जाम है,
कुछ पी गए कुछ छलक गए।

दुःख से मनुष्य का जन्म-जन्मान्तर का नाता है। मनुष्य रोता हुआ ही इस संसार में प्रवेश करता है और संसार उसे कभी आँसुओं के साथ, कभी बिना आँसू भिन्न-भिन्न तरीकों से जीवन भर रुलाता रहता है। पुनश्च मरते वक्त यमराज इतना अवकाश नहीं देता कि वह रो सके, नहीं तो यही कहा जाता कि मनुष्य संसार से अलविदा भी रोते-रोते ही होता है।

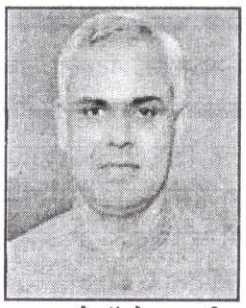
आचार्य डॉ. देवव्रत जी

न्यायदर्शन के प्रणेता गौतम जन्म को दुःख मानते हैं, अगर किसी ने जन्म लिया है तो वह अवश्य दुःखी होगा ही। योगदर्शनकार पतंजलि संसार को परिणाम, ताप, संस्कार और गुणवृत्ति विरोध-इन चार कारणों से दुःखमय मानते हैं। उनके अनुसार आत्मा और मन का संयोग ही दुःखी होने में पर्याप्त कारण है अर्थात् जीवात्मा का संसार में होना ही दुःखी होने में काफी है, दूसरे हेतु की आवश्यकता ही नहीं। सांख्यकार कपिल के अनुसार सभी सुखों में दुःख का मिश्रण रहता है, इसलिए वे सुखों को भी दुःख में ही गिनते हैं। महात्मा बुद्ध संसार को हेय दुःखरूप कहते हैं। अतः सभी दार्शनिक विचारक समवेत स्वरों में मनुष्य के साथ दुःखों के प्रगाढ़ सम्बन्धों की उद्घोषणा करते हैं। दुःख की नित्यता पर उनका कहना है-

दर्द हाथों की लकीर बन गया,
यह हमारा मुस्तकिल मेहमान है।

जो भी इन्द्रियों के प्रतिकूल है, विरुद्ध है, वह दुःख कहलाता है। कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता, सभी प्रकार के अतिशास्त्रीय शाश्वत वचनों के अनुसार संसार में अनुकूलतायें कभी किसी को नहीं मिलती। कहीं न कहीं, कुछ न कुछ कमी रह ही जाती है। सभी समीकरणों का ठीक से ठीक होना कभी गलती से भी ठीक नहीं होता। किसी के पास निर्धनतावश खाने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं होते हैं। पैसे हों, सम्पन्नता हो, तो खाने की फुर्सत नहीं होती या पौष्टिक इच्छानुकूल स्वादिष्ट खाना खा सकें, ऐसा स्वास्थ्य नहीं होता। पैसा भी हो, स्वास्थ्य भी हो, तो घर में पत्नी विविध प्रकार के नित-नूतन क्लेशों से पैसे और भोजन का मजा किरकिरा किए रहती है। पत्नी सुरुपा, सुशील, मधुरभाशिणी हो, तो सन्तति के अभाव का दुःख घेरे रहता है। सन्तति, बच्चों में भी यदि केवल कन्यायें ही हो जाएं, पुत्र न हो, तो उसका अभाव भी आजीवन खटकता है। और यदि पुत्र-प्राप्ति की कामना पूरी हो गई, किन्तु वह निकम्मा, निर्बुद्धि, दुराचारी निकल जाए, तो पूरा जीवन पुत्र के साथ अपने को कोसते हुए ही बीतता है। पुत्र भी अनुकूल हो, तो सामाजिक विसंगतियां तंग किए रहती हैं। देववश, सब ठीक हो भी, तब भी भविष्य में क्या होगा, क्या मैं इस साजो सामान के साथ सुरक्षित रह पाऊँगा, यह चिन्ता वर्तमान को दुःख से आक्रान्त किए रहती है। सभी प्रकार से मुकम्मल तो संसार हो ही नहीं सकता। इन नित्य अनुभवों के बाद मानव हृदय से यही निकलता है-**कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता। कहीं जमीं तो कहीं आस्मां नहीं मिलता।**

विधि ने मनुष्य को पीड़ित और दुःखी करने की भी विचित्र विधियां अन्वेषित की हुई हैं। एक संस्कृत कवि के अनुसार-

क्षते प्रहारा निपतन्त्याभीक्ष्ण्यं,
धनक्षये दीप्यति जठराग्निः।
आपत्सु वैराणि समुल्लसन्ति,
छिद्रेश्वनर्था वहुली भवन्ति।।

कहीं घुटने या कोहनी अथवा शरीर के किसी अंग पर चोट लगी हो, तो बार-बार चोट वहीं लगती है। यूं भूख नहीं लगती, किन्तु धन के क्षीण होते ही पेट की अग्नि तेज हो जाती है, एक आपत्ति के साथ अन्य कई विपदायें साथ-साथ आती हैं। वक्त बुरा चल रहा हो, तो बिना वजह ही लोगों से वैर बढ़ जाते हैं। बांध में एक छोटा-सा छिद्र महाविनाश की लीला रच देता है। बहुधा जीवन में दुर्घटनायें इस क्रम से घटित होती हैं कि आदमी को लगता है कि जैसे जहां भर के दुर्भाग्य मानो उसी की ही झोली में आ सिमटे हैं। कदम-कदम पर ठोकरें लगती हैं।

मुखालिफ बख्त हो तो काम
बन-बन बिगड़ता है।
सफीना जा पड़ा मझधार में
टकरा कर साहिल से।।

बुरे वक्त का दौर हो तो कोशिशें आखिरी वक्त पर नाकाम हो जाती हैं। इससे अधिक भाग्य की मन्दता क्या हो सकती है कि कोई नौका को उफनती सागर की लहरों से निकाल लाए और किनारे पर आकर डूब जाए। कई बार ऐसी पीड़ाओं से परिचय होता है जब आप न किसी से कुछ कह पाते हैं और न ही रो पाते हैं। कभी जिन पर बड़ा विश्वास होता है, अप्रतिम प्रेम होता है, जिन्हें आप अपने जीवन का अंग मानते हैं, वे अचानक बेवफा हो जाएं, आपके कोमल हृदय को काँच की भाँति खण्ड-खण्ड कर आपसे किनारा कर लें, तो कोई ऐसी स्थितियों में खामोशियों का दामन थामने के अतिरिक्त और क्या करें ?

शबनम ने रोके जी हल्का कर लिया।
गम उसका पूछिये जो रो न सके।।

संसार के नानाविध सम्बन्धों में जब व्यक्ति अपने अकेलेपन को मिटाने में असफल हो जाता है, विशेषतः जीवन के अन्तिम पड़ाओं में, जब बच्चों के बच्चे होकर, यद्यपि परिवार को विस्तार दे चुके होते हैं, पर आपके साथ किसी में कोई रुचि नहीं होती। दिन में अखबार को चार-पाँच बार दुहराकर, सांझ पार्क में कोने में अकेले बैठे, सम्बन्धों की दुनिया में अपने अकेलेपन पर विचार कर रहे होते हैं-**आइने के सौ टुकड़े, हमने करके देखे हैं। एक में भी तन्हा थे, सौ में भी अकेले हैं।** और व्यक्ति जब अपनी बेकसी आँसुओं की जगह मुस्कराहट से छिपाने की कोशिश कर रहा हो तो ये पंक्तियां याद हो आती हैं :-

तुम इतना जो मुस्करा रहे हो।
क्या गम है जिसे छिपा रहे हो।।

कई बार पीड़ायें दिल की हदों को पार कर सीधी आत्मा को जा छेदती हैं। एक विधवा मां अपने इकलौते बेटे का इन्तजार कर रही है जो आज वर्षों बाद विदेश से उच्च शिक्षा लेकर वापस आ रहा है। सुबह से ही मां घर को सजा संवार कर तरह-तरह के पकवान बनाने में लगी है और मां कैसे भूल सकती है कि उसके बेटे को गाजर का हलवा बहुत पसंद है।

उधर कड़ाही में कड़छुल चल रहा है और इधर कल्पना की झील में मन अठखेलियाँ कर रहा है... आने दो राहुल को, आते ही कहूँगी **"अब मुझसे अकेले नहीं होता घर का काम। एक अच्छी-सी, प्यारी-सी बहु ला दे, जो तेरी माँ की सेवा किया करे।"** इसी प्रकार की बहुत-सी मीठी शिकायतों को संजोने में व्यस्त माँ गाजर का हलवा और मन का महल साथ-साथ बना रही है। तभी किचन में रखा कार्डलैस फोन गड़गड़ा कर बज उठता है। माँ की कल्पना उड़ान और तेज हो जाती है। शायद राहुल एयरपोर्ट पहुँच गया है, उसी का फोन है। हो सकता है, बाहर दरवाजे से मोबाइल से फोन कर मुझे सरप्राइज देना चाह रहा हो। सेकेण्डों में मीलों दौड़ने वाले कल्पना के घोड़ों को रोककर माँ फोन उठाती है। उधर से आवाज आती है-

हैलो मिसेज वर्मा। हाँ, मैं मिसेज वर्मा बोल रही हूँ। मिसेज वर्मा, हम इन्दिरा गाँधी एयरपोर्ट से बोल रहे हैं। राहुल वर्मा जिस विमान से आ रहे थे, वो क्रैश हो गया है। सारे यात्री मारे... ..। आगे बिना सुने ही फोन हाथ से लुढ़क जाता है। बेटे के इन्तजार में चन्द मिनटों पहले जो चेहरा गुलाबी हो रहा था, वह सफेद हो रहा है और कड़ाही में गाजर का हलवा काला। विधवा का इकलौता बेटा, एकमात्र सहारा बिना देखे आकाश में ही माँ को अलविदा कह दे-इस दुःख की गहराई को कौन नाप सकता है? संसार में दुःखों की बेतहाशा भीड़ और दुःख की इस गहराई को देखते हुए गालिब को कहना पड़ा-

गालिब मेरी किस्मत में गर गम
इतना था, दिल भी यारब कई
दिए होते।

आखिर एक दिल दर्द सहे भी तो कितना सहे ? दर्द सहने की सीमायें होती हैं। दर्द इतना ज्यादा है तो उसे सहने के लिए दिल भी अनेक होने चाहिए। कम से कम एक दिल इतने दर्द को सहने में समर्थ नहीं होता। कभी-कभी दर्द की इन हदों को देखकर मनुष्य सोच में पड़ जाता है कि मेरे दुःखों को देखकर क्या परमात्मा का मन भी नहीं पसीजता ? पुत्र दुःखों के सागर में हिचकोले खाता रहे और पिता किनारे पर खड़ा आनन्द शान्ति के गीत गाए। थोड़े-बहुत किनारे के आसार भी बने तो कोई लहर उठाकर दूसरे और गहरे मझधार में पटक दे और पिता के आनन्द में कोई फर्क न पड़े। ऐसे पिता को तो क्रूर हृदयहीन ही कहा जाएगा। चाहे वह सांसारिक पिता हो या परम पिता परमात्मा। एक पाश्चात्य दार्शनिक ने तो ईश्वर के आनन्द की स्वरूपता पर टिप्पणी करते हुए यहां तक कह दिया कि यदि भगवान् आनन्दमय है और वह इस दुनिया को इतना दुःखी देखते हुए भी कुछ नहीं करता, तो वह किसी जल्लाद से कम नहीं है।

ईश्वर के अस्तित्व पर इतना बड़ा दोशारोपण होने के पश्चात् अधिक आवश्यक हो जाता है कि दुःख के महत्त्व की विवेचना की जाए। सुख का

शेष पृष्ठ 6 पर....

thearyasamaj.org

बेटियाँ शुभकामनाएँ हैं

❑ कृष्ण वोहरा, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, 641, जेल ग्राउण्ड, सिरसा

हरयाणा सरकार ने वर्ष 2015 को बेटियों के मान-सम्मान को बढ़ाने के लिए समर्पित किया है। 22 जनवरी को देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पानीपत में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के नाम से एक विशेष अभियान का श्रीगणेश किया।

आज की बेटी ही कल की जननी है। जिस समाज में नारी का मान-सम्मान सुरक्षित होता है, वह समाज निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होता है। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती सदा कहते थे—'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता'। नारी का पालन करने वाली माता है। हमारे हृदय में नारी के प्रति सम्मान की भावना हो, यही हमारे हिन्दू धर्म का सन्देश है, यही हमारे धार्मिक ग्रन्थों का सन्देश है।

आज हमारी बेटियाँ जीवन के हर क्षेत्र में निरन्तर आगे बढ़ रही हैं। वार्षिक परीक्षा परिणामों में बेटियां पहले स्थान पर हैं। सरकारी अर्द्ध सरकारी एवं गैर सरकारी सेवाओं में बेटियाँ बहुत आगे हैं। बैंक, डाकघर, पुलिस, सेना, स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालय आि में बेटियों का योगदान प्रशंसनीय है। अब हमारी बेटियां घर की चारदीवारी से निकलकर अध्यापिका, प्राध्यापिका, चिकित्सक आदि के रूप में अपनी सेवाएँ राष्ट्र को दे रही हैं।

हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री मनोहरलाल ने वर्ष 2015 को बेटियों के नाम समर्पित करके एक सराहनीय कार्य किया है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के अन्तर्गत वर्ष भर ऐसे कदम उठाये जायेंगे जिससे हमारी सोच में परिवर्तन होगा। हमारी विकृत मानसिकता के कारण ही बेटियों से छेड़छाड़ की घटनाएं होती हैं। परिवारों में भ्रूण-हत्याएं होती हैं। नववधुओं की हत्याएं होती हैं।

21वीं शताब्दी हमें आह्वान करते हैं कि हम बेटियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखें। बेटियों के जन्म पर कूंआ पूजन करें। बेटियों को घर-परिवार में बेटों के समान समझें। आज की बेटी कल की माँ है। बेटी ही सरस्वती, दुर्गा और लक्ष्मी है।

हरयाणा सरकार के बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के अभियान से निश्चित रूप से राष्ट्र की नवनिर्माण की गति तेज होगी।

बेटियां समाज को राष्ट्रधर्म के पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देने वाली मातृशक्ति ही है। प्राचीनकाल में सावित्री, शैव्या, सुलभा, देवयानी, अपाला, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, विदुला, शतरूपा, वृन्दा, भद्रा, उशिता, गार्गी, रोहिणी, शावती, गौतमी, द्रोपदी, मदालसा, अनुसूया, कुन्ती, दमयन्ती, तारा तथा वैदेही जैसी वेदज्ञाता एवं विदुषियों ने नारी जाति के सम्मान एवं गौरव को बढ़ाया। प्रख्यात साहित्यकार महादेवी वर्मा, कूटनीतिज्ञ श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित, राजनेता श्रीमती इन्दिरा गांधी, पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा देवी पाटिल, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार, आई.पी.एस. अधिकारी किरण बेदी, वर्तमान विदेश मंत्री सुषमा स्वराज आदि असंख्य नारियों ने यह प्रमाणित कर दिया है कि वे पुरुषों के समान योग्य हैं। उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के अवसर दिए जाएँ। छात्रवृत्तियाँ दी जाएँ। सामाजिक संस्थाएँ आर्थिक सहायता करें।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

हम सब नारी के प्रति सम्मान की दृष्टि रखें वह जगज्जननी है। इसीलिए अरविन्दाश्रम की पूज्य माता जी कहा करती थी—माँ ईश्वर के समान है। जन्म देने वाली है, अच्छे संस्कार देकर जीवन का निर्माण करने वाली है।

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक पत्र में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@gmail.com

स्वास्थ्य-चर्चा....

मैथी के अनुभूत योग

मैथी से हम सब अच्छी तरह से परिचित हैं। हरी पत्तेदार सब्जियों तथा मसालों में मैथी का अपना विशिष्ट स्थान है। मैथीदाना हमारे शरीर व स्वास्थ्य के लिए अमृत तुल्य है। यह एक पौष्टिक खाद्य, स्फूर्तिदायक व रक्तशोधक टॉनिक है। आयुर्वेदिक के मतानुसार मैथी दाना ज्वरनाशक, कृमिनाशक, वातनाशक, हृदय रोग, पुराना खांसी, वमन शामक तथा क्षुधावर्धक होता है। हैदराबाद के राष्ट्रीय पोषण संस्थान के अनुसंधानकर्त्ताओं का यह मत है कि मैथी का बीज (दाना) डायबिटीज (मधुमेह) के इलाज के लिए कारगर हो सकता है और इससे रोग को नियन्त्रण में रखा जा सकता है।

मैथी काड लीवर आयल का विकल्प है। इसमें रस्मेथाईलेमिन नामक तत्त्व पाया जाता है। यह ज्ञानतन्तुओं को बल प्रदान करता है। यह घुटनों में दर्द, स्नायु रोग, बहुमूत्र रोग, सूखा रोग आदि में लाभकारी है। मैथी में कैल्शियम, फास्फोरस, लोह, करोटिन थियामिन, नियासिन, विटामिन-सी विभिन्न मात्रा में रहते हैं। इसमें लोहतत्त्व भरपूर मात्रा में होने के कारण रक्ताल्पता में मैथी हितकर है।

मासिक धर्म में मैथी के बीजों का सेवन करने से खून की कमी दूर हो जाती है। मैथी मजबूती व ताकत में भी बेमिसाल है। किसान भाई अपने बैलों को मजबूत रखने के लिए मैथी का बांटा खिलाते हैं। जाड़े के दिनों में प्रायः मैथी के लड्डू बनाये जाते हैं जो कि पौष्टिकता व स्वादिष्टता से भरपूर होते हैं। हमारे पूर्वज जब सीमेंट नहीं होती थी तब भवन निर्माण में मजबूती हेतु चूने के साथ-साथ मैथी दाना एवं गुड़ पिसवाकर प्रयोग में लाते थे। मैथी औषधि के रूप में भी उपयोग में लाई जाती है। आज भी घरों में बूढ़ी औरतें कई बीमारियों में मैथीदाने का उपयोग नुस्खे बतौर करती हैं।

मैथी के घरेलू औषध उपयोग

- बहुमूत्र रोगियों को मैथी की कोमल पत्तियों को कुचल कर उसका रस देना चाहिए।
- कब्ज दूर करने में मैथी दाना बेमिसाल है। कैसी भी कब्ज हो मैथी दाने के प्रयोग से दूर हो जाती है। मैथी दाना पेट में जाकर फूलता है व आंतों को चिकना व तर कर देता है। साथ ही मल की गुठलियां बनने नहीं देता है।
- मुंहासे होने पर मैथी की पत्तियां पीसकर चेहरे पर लगाएं। मैथी की पांच-पांच ग्राम चूर्ण सुबह शाम मतीर में मिलाकर पीने से सफेद आंव की शिकायत दूर होती है। मैथी का आटा दही में मिलाकर खाने से खूनी पेचिश से राहत मिलती है।
- गर्मी के दिनों में लू लगने पर मैथी के सूखे पत्तों को ठंडे पानी में भिगोकर थोड़ी देर बाद मसलकर छान लें और शहद मिलाकर पी लें। लू का असर दूर हो जाएगा।
- सवेरे मैथी दाना के बारीक चूर्ण की एक चम्मच की मात्रा पानी के साथ फक्की लगाएं। इससे घुटनों का दर्द समाप्त हो जाता है।
- मैथी, कॉड लीवर ऑयल का विकल्प है, अतः कॉड लीवर ऑयल की तरह घुटनों का दर्द, स्नायु रोग, बहुमूत्र रोग, सूखा रोग, खून की कमी आदि में लाभदायक रहता है।
- मैथी की पत्तियों की पुल्टिस सूजन पर बांधने से आंतरिक व बाहरी सूजन में आराम मिलता है।
- बाल कमजोरी के कारण गिरते हैं तो मैथी पानी में पीसकर बालों की जड़ों को रगड़ें, सूख जाने पर धो लें।
- दो चम्मच बीजों को रात भर भिगो के प्रातः बीजों को पीसकर बालों की जड़ों में लगाकर आधे घण्टे तक बालों को सूखने दें। इसके बाद बालों को रीठे या शिकाकाई से धो लें। रूसी समाप्त हो जाएगी।
- मैथी का चूर्ण बनाकर रख लें। 3-3 ग्राम चूर्ण सुबह-शाम गुण या पानी में मिलाकर कुछ दिनों तक सेवन करने से कब्ज दूर हो जाती है।
- मैथी को पानी में उबालें व छानकर दांतों पर यह पानी मलें। दांत मजबूत व चमकदार होंगे तथा मुख की बदबू दूर होगी।
- मैथी के बीजों को पीसकर आंखों की कालिमा के नीचे लगायें, इससे नाखूनों में चमक व मजबूती आती है।
- मैथी के लड्डू स्वास्थ्यवर्धक होते हैं। मैथी के साथ आलू के पराठे बनाये जाते हैं, जो स्वादिष्ट होते हैं।
- किसान लोग अपने पशुओं को मजबूत रखने के लिए मैथी का बांटा दूसरे बांटे में मिलाकर देते हैं। यह बांटा विशेषरूप से बैलों को खिलाया जाता है।
- मैथी की सूखी पत्तियों को पानी में भिगो दें फिर उसे अच्छी तरह मसल कर पानी को छान लें। उसमें थोड़ा-सा शहद मिलाकर पीने से लू से छुटकारा मिल जाता है।

(यज्ञ योग ज्योति से साभार)

'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' जागरूकता रैली

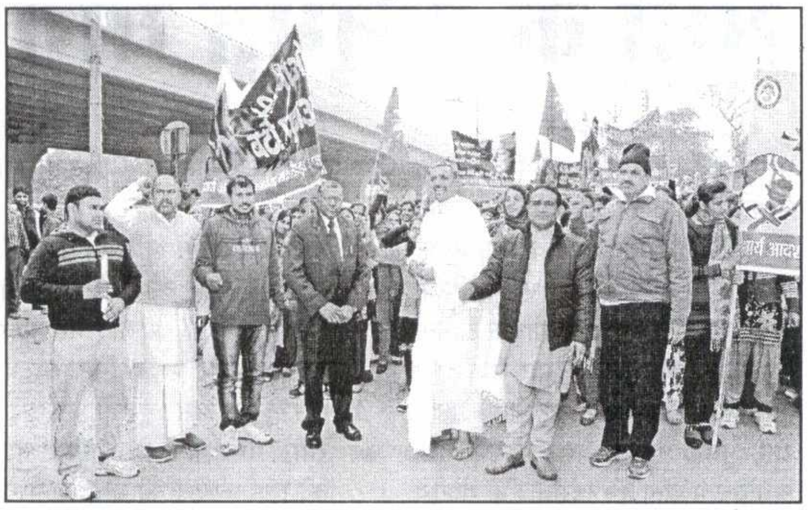

आर्य शिक्षण संस्थाएं पानीपत तथा आर्य आदर्श गर्ल्ज कॉलेज मतलौडा के तत्त्वावधान में भारत के माननीय यशस्त्री, कर्मठ, निष्ठावान्, राष्ट्र समर्पित, सुयोग्य प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी '**बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ**' आन्दोलन के अन्तर्गत जागरूकता के लिए एक जागरूकता रैली आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत से निकाली गई। इस यात्रा का उद्देश्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के '**कन्या शिक्षा प्रणाली**' आन्दोलन गति देना है। 19वीं शताब्दी में आर्यसमाज की स्थापना करके महर्षि दयानन्द ने कन्या पाठशाला का समर्थन करके कन्याओं की शिक्षा के लिए '**कन्या गुरुकुलों**' की स्थापना की। इस अभियान की ओर अग्रसर करने के लिए महर्षि के अनन्य भक्त और अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कन्या शिक्षा के लिए अपनी कन्याओं को गुरुकुल में प्रविष्ट कराया। आज सौभाग्य से भारत के उच्च पदासीनस्थ प्रधानमन्त्री श्री मोदी जी के द्वारा कन्या भ्रूणहत्या को रोकने के लिए '**बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ**' आन्दोलन को राष्ट्रीय स्तर पर चलाकर भारत का गौरव व सम्मान बढ़ाया है। इस कार्यक्रम का न केवल मानव समाज अपितु आर्यसमाज भी पूर्ण समर्थन करता है। भारत की प्राचीन काल से ही नारी शिक्षा की पावन व उच्च परम्परा रही है! मध्यकाल में कन्या शिक्षा में कुछ अवरोध आए परन्तु समाज सुधारक महर्षि दयानन्द ने उन सब अवरोधों को दूर करके यह घोषणा की कि जिस राष्ट्र की नारी सुशिक्षित होंगी वहां का प्रत्येक नागरिक सभ्य व सुशिक्षित होगा।

आचार्य आजाद आर्य ने सम्बोधन करते हुए कहा कि आज समाज में नारी की स्थिति में जो सुधार हुआ है उसका श्रेय महर्षि दयानन्द जी को जाता है। आचार्य अभय आर्य जी ने कहा कि नरेन्द्र मोदी जी ने नारी जागरण का कार्य करके आर्यसमाज के कार्य का पूर्ण समर्थन किया। इसके लिए उनका बहुशः धन्यवाद। आचार्य राजकुमार शास्त्री ने कहा कि जिसके माता-पिता व आचार्य आचारवान् होते हैं, उसके संस्कार श्रेष्ठ होते हैं। अतः कन्या शिक्षा आवश्यक है। इस अवसर पर हरियाणा के पूर्व मंत्री श्री एम.एल. रंगा जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आज कन्या भ्रूणहत्या को रोकने के लिए कानून की जागरूकता के साथ-साथ व्यक्ति विशेष व सामान्य को भी जागना होगा।

जागरूकता यात्रा में आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, वीर भवन, पानीपत, आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत, आर्य आदर्श गर्ल्ज कॉलेज मतलौडा के छात्र-छात्राओं व अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं ने भाग लिया।

यात्रा का सफल संचालन श्री सन्दीप आर्य, श्री जगदीश चहल, प्राचार्या रेखा शर्मा, डॉ. हरिसिंह वर्मा (प्राचार्य), नीलम, सरिता, ममता, मोनिका, मनीषा आदि उपस्थित रहे।

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	कन्या गुरुकुल मोरमाजरा जिला करनाल	13 से 15 फरवरी 2015
2.	गुरुकुल झज्जर	21 से 22 फरवरी 2015
3.	आर्यसमाज रसूलपुर जिला महेन्द्रगढ़	28 फर० से 1 मार्च 2015
4.	आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल जिला पलवल	27 फर० से 1 मार्च 2015
5.	आर्यसमाज खेड़की जिला महेन्द्रगढ़	7 से 8 मार्च 2015
6.	आर्यसमाज शेखूपुरा खालसा, निकट घरोण्डा जिला करनाल	20 से 22 मार्च 2015

—सभामन्त्री

दुःख के अन्तस् से जन्मा आनन्द...

प्रथम पृष्ठ का शेष.....

जीवन प्रवाह उथला होकर बहता है जबकि जीवन को गहराई देने का काम दुःख करते हैं। जीवन क्या है ? मैं क्यों हूँ ? यह सारा खेल किसलिए रचा गया है ? कहां से आये हैं ? कहाँ जाना है ? आदि प्रश्न दुःखित चित्त में उदित होते हैं चित्त में संवेदनशीलता जैसा दिव्यतत्त्व दुःख से ही जन्मता है। सच्चे सुख की खोज में दुःख-संतप्त अन्तःकरण ही निकलता है। परमपिता परमात्मा सचमुच आनन्दमय है। और वह चाहता है कि उसके सभी पुत्र-पुत्रियाँ उसके आनन्द को भोगें। इसलिए उसने संसार की रचना में दुःखों का जाल फैला रखा है. ...कि कोई आतुर हो जाए सच्चे आनन्द के लिए, शायद किसी की लौ लग जाए परमानन्द को पाने की। परमात्मा का आनन्द तो चारों ओर, सब जगह फैला हुआ है। किन्तु जब तक उतनी पात्रता न आ जाए, चित्त उतना प्रौढ़ न हो जाए, उसके आनन्द का स्पर्श नहीं मिलता। दुःख ही एकमात्र तत्त्व है जो चित्त को पात्र और प्रौढ़ बनाता है। दुःखों की सन्तप्त भट्ठी से गुजरकर जब आत्मा कुन्दन बन जाती है तभी परम की अनुकम्प-अमृत छीटें उस पर पड़ती हैं।

दुःख के गहन अन्धकार से गुजरकर ही आनन्द प्रभात का नवोन्मेश होता है। परमात्मा आपको दुःखों की गहरी खाई में धकेल देना चाहता है ताकि आनन्द के सर्वोच्च शिखर को आप स्पर्श कर सकें। दुःख की जितनी गहराई से अनुभूति होती है, चेतना-स्तर उतना ही उन्नत हो जाता है। इस प्रकार दुःख परमात्मा की करुणा का ही एक रूप है।

किन्तु मनुष्य दुःख की गहनता में उतरे बिना ही विकल्प तलाश लेता है। पद, पैसा, प्रतिष्ठा, शराब, टी.वी. आदि लालीपॉप उसे संसार में घेरे रहते हैं। अतः सोने को कुन्दन बनाने वाला ताप उसे नहीं मिल पाता। इसलिए महर्षि पतंजलि ने दुःख को सुख मानना अज्ञान कहा है।

मतलब यह है कि जब तक मनुष्य, 'संसार एक दिन मुझे पूर्ण सुखी कर देगा, इस आशा में डूबा रहता है'- वह परम आनन्द के स्रोत परमात्मा की ओर एक कदम भी नहीं बढ़ा पाता। दुःख देने के पीछे परमात्मा की कोशिश मनुष्य को परम आनन्द की ओर ले जाने की ही है। वह तो चिरकाल से प्रतीक्षारत है कि आप संसार के झूठे सुखों से उपर उठकर दिव्य आनन्द की ओर चल सकें।

लाखों में कोई एक मनुष्य परमात्मा के इस इशारे को समझ पाता है कि परमात्मा दुःखों की डोर से, अपने पास खींच रहा है। जो उसके इस इशारे को समझ लेता है वह उसके परम करुणा के इस रूप को जान लेना है, वह योगी हो जाता है, उसका परम प्रिय हो जाता है। तब गहन दुःख और अतुल प्रेम से मिश्रित आँसुओं के साथ यह स्वर निकलता है-

हमें गम भी उनका अजीज है,
कि उन्हीं की दी हुई चीज है।

शायद चेतना की यही उच्चतम प्रौढ़ता है, शायद यही प्रेम का सर्वोत्कृष्टतम रूप।

सम्मानित पाठक कृपया ध्यान दें

यदि 'आर्य प्रतिनिधि' न मिले तो....

सम्मानित सदस्यो! '**आर्य प्रतिनिधि**' साप्ताहिक आपकी सेवा में प्रत्येक माह की 7, 14, 21, 28 तारीख को प्रेषित किया जाता है। दस दिन तक न मिलने पर कृपया दूरभाष पर अवगत कराएं, पुनः प्रेषित किया जायेगा। कहीं-कहीं से ऐसी शिकायतें भी मिलती हैं कि उन्हें '**आर्य प्रतिनिधि**' लम्बे समय से नहीं मिला है या सदस्यता सहयोग दिये जाने के बाद भी नहीं मिल रहा है, तो इस विषय में सभा के रोहतक कार्यालय से दूरभाष पर पुष्टि करने के बाद कृपया सम्बन्धित डाकघर के पोस्टमास्टर अथवा संभव हो तो प्रवर अधीक्षक डाकघर-संबंधित प्रखण्ड से भी इसकी शिकायत करें। हम तो अपने स्तर पर समुचित कार्यवाही करेंगे ही, ताकि आपको '**आर्य प्रतिनिधि**' यथासमय मिलता रहे और डाक के वितरण में किसी प्रकार की गड़बड़ी न हो।

रघुवरदत्त, व्यवस्थापक 'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक
दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)
फोन नं० : 01262-216222, 7206865945

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

thearyasamaj.org

स्वतंत्रता दिवस व गणतन्त्र दिवस दोनों को समाहित कर प्रतिवर्ष एक बार ही राष्ट्र-दिवस मनाया जाए

❑ महावीर 'धीर' 21/1227 प्रेम नगर, रोहतक-9466565162

आजादी के कुछ वर्षों बाद तक स्वतंत्रता दिवस व गणतन्त्र दिवस लोगों के लिए आकर्षण व प्रेरणा के स्रोत रहे लेकिन आज दोनों ही राष्ट्रीय दिवसों का पहले जैसा आकर्षण नहीं रहा। दोनों दिवसों की तैयारी के लिए सभी विभाग महीना भर पहले से तैयारियों में जुटते हैं। इन समारोहों में जनवरी मास में परेड की तैयारी में बच्चे सर्दी में ठिठुरते रहते हैं तथा अगस्त में प्यास से बेहाल बच्चे मूर्च्छित तक हो जाते हैं। बच्चों को तो हमने शोभा के लिए खिलौने बना रखा है कि जब चाहे तब उन्हें घंटों सड़कों पर खड़ा कर देते हैं। प्रात: 8 बजे से नन्हें छात्र मैराथन दौड़ के लिए खड़े किये जाते हैं तथा उन्हें हरी झंडी दिखाने के लिए नेता जी सायं 3-4 बजे पहुंचते हैं। जैसे ये छात्र नहीं बल्कि निर्जीव पुतले हों भले ही कितनी देर भूखे प्यासे इन्हें खड़े रखें। अनेक बार इन राष्ट्रीय समारोहों में अश्लील नृत्य, गायन तक किये जाते हैं जिनका इनसे कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता।

मैं समझता हूं कि अब हमें भारत राष्ट्र को एक सशक्त राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करने के लिए स्वतंत्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस के स्थान पर एक बार ''राष्ट्र-दिवस'' ही मनाना चाहिए। राष्ट्र दिवस मनाने के लिए सर्वोत्तम समय चैत्र मास की प्रतिपदा ही है। इस दिन देश में दुल्हैंडी मनाई जाती है। इससे पहला दिन होली पर्व का है। यह वर्ष का अन्तिम दिन है तथा पहला दिन दुल्हैंडी वाला दिन है। यह समय वसन्त ऋतु का है। इस समय न अधिक सर्दी होती है न गर्मी। पहले दिन होली के सामूहिक हवन शास्त्रसम्मत विधि से पूरे देश में किए जाएं। नए अधपके अन्न के होले बनाकर परस्पर मिल बैठकर खाए जाएं।

अगले दिन उत्तम उत्तम महापुरुषों व प्रान्तों की उत्तम उत्तम प्रेरणादायक झांकियां निकाली जाएं तथा शारीरिक करतबों व गायन, नाटक आदि की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएं। ढोल नगाड़ों की धुन पर कार्यक्रम हों तथा पुरस्कार दिए जाएं। ये कार्यक्रम सभी गांवों व खण्ड स्तर पर उचित ढंग से आयोजित किए जाएं। राजधानी दिल्ली में शस्त्रास्त्रों के पथ संचालन व हवाई करतब भी हों। एक अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार 115वें वर्षीय संवत् वाले भारत राष्ट्र को उसके सम्पूर्ण काल से जोड़कर ''राष्ट्र-दिवस'' मनाया जाए, मुगल कालीन व अंग्रेज के समय के बलिदानियों के स्मरण करने के साथ-साथ दो अरब वर्ष के लम्बे समय में हुए ज्ञात मनीषियों एवं प्रतिष्ठित राजा महाराजाओं का भी स्मरण किया जाए। जिस महान राजा अश्वपति ने दावा किया था कि हे महर्षियो! मेरे राज्य में न कोई चोर है, न अपराधी, न नशेड़ी व चरित्रहीन कोई पुरुष या स्त्री। सभी प्रभुभक्त अग्निहोत्री व सुखी हैं। ऐसे राजा की झांकी क्यों न हो? महाराजा जनक ने कहा था-मेरे मन में पाप आ गया था। मुझे भरोसा नहीं रहा मैं कब डूब जाऊं। मैं राजा बने रहने लायक नहीं रहा। मैं पश्चात्ताप के लिए लिए चिता में जलकर प्राण छोड़ूंगा। आप अपना योग्य राजा चुन लीजिए। ऐसे राजा की झांकी क्यों न दिखाई जाये? न्यायकारी राजा विक्रमादित्य की झांकी क्यों न दिखाई जाये? षड्दर्शनकर्ताओं व वेदों के रचयिता ऋषियों की झांकियां क्यों न हों? उस अर्जुन की झांकी क्यों न हो जिसने कहा था कि-सगे भाइयों व सम्बन्धियों को मारकर राज करने से तो भीख मांग कर जीवन निर्वाह करना भी अच्छा है। उस युधिष्ठिर, भीष्म पितामह, धृतराष्ट्र, गांधारी, द्रौपदी व कुन्ती की झांकियां क्यों न दिखाई जाएं जिन्होंने महाभारत युद्ध के बाद कहा था कि-हमारा सारा वंश हमारे सामने ही समाप्त हो गया, विधवाएं विलाप कर रही हैं, ये हमने क्या किया? अब कौन किस पर राज्य करेगा? सम्राट अशोक व महात्मा बुद्ध की झांकियां क्यों न हों? अन्य भी ग्राम, नगर व प्रान्तों में प्रेरणादायक प्रसंग मिल सकते हैं जिनको राष्ट्र-दिवस पर उचित ढंग से सम्मानपूर्वक दिखाया जा सकता है।

31 दिसम्बर की आधी रात को बम फोड़कर हो हल्ला करने वाली भावी पीढ़ी को दिखाया जाए कि सच्चा व मानव का प्रथम संवत् दो अरब वर्ष का है जो हमारे देश में चलता है। यह चैत्र में बदलता है। जब पूरे धरातल पर समशीतोष्ण काल होता है। नई कौंपलें फूटती हैं, पकते अन्न, कूकती कोयल, नाचते मोर, नई बनती कोशिकाएं तथा समस्त चराचार उमंगित होता है वही चैत्र का प्रथम दिन वर्ष का प्रथम दिन है। अब हम पराधीन नहीं। अपनी महान संस्कृति, भाषा, धर्म, खान-पान, पहरान की महत्ता को क्यों न जानें और जनायें। देश के स्वाभिमान जगाने की आवश्यकता है। अरे स्वतंत्र भारतीयो! पराधीनता की उधारी थोपी गई संस्कृति को छोड़ो! यह संस्कृति नहीं विकृति है। क्या हम भाषा व संस्कृतिविहीन राष्ट्र के नागरिक हैं? नहीं! कभी नहीं! दूसरों को जानने से पहले अपने को जानो। महान राष्ट्र के महान सपूतो उठो! समझो! जागो और दूसरों को भी जगाओ। एक-एक व्यक्ति अणु बम से भी अधिक शक्तिशाली है। यदि वह कुछ अच्छा करने की ठान ले। यह न समझो मैं अकेला क्या कर सकता हूं। करने वाला तो अकेला ही करता है। दूसरे तो सहयोगी बन जाते हैं।

"जय राष्ट्र भारत जय राष्ट्र पुरुष"
"देवत्व संस्कृति की विजय हो"

ओ३म्

अब हो रही जय-जयकार, प्यारे ऋषिवर की।
सच्चे गुरु ऋषि दयानन्द प्यारे, सारे बिगड़े काम संवारे।
विद्या थी अपार, प्यारे ऋषिवर की।
वेद उद्धारक ऋषि दयानन्द, धर्म सुधारक ऋषि दयानन्द।
सुखी किया संसार, प्यारे ऋषिवर की।
वेदों का प्रचार किया है, सत्य धर्म प्रचार किया है।
दिया ज्ञान भण्डार, प्यारे ऋषिवर की।
वेद सनातन धर्म बताया, सत्य शास्त्रों का मान बढ़ाया।
किया सत्य प्रचार, प्यारे ऋषिवर की।
जहर पिलाने वाला छोड़ा, तलवार चलाने वाला छोड़ा।
देखो दया अपार, प्यारे ऋषिवर की।
पादरी-मौलवी मजहबी हारे, कांशी के पण्डित भी सारे।
सबको दिया पछाड़, प्यारे ऋषिवर की।
जन्म-जात सब मिथ्या बताई, छुआछूत भी दूर हटाई।
सबका किया सत्कार, प्यारे ऋषिवर की।
जड़पत्थरों की पूजा छुड़वाई, सच्चे प्रभु से प्रीत सिखाई।
पुजाया सच्चा करतार, प्यारे ऋषिवर की।
ऋषिवर के गुण गाएं मिलकर, ऋषि की जय मनायें मिलकर।
'सेवक' रहा पुकार, प्यारे ऋषिवर की।

ईश्वर को छोड़कर, अब पूजता पाषाण है।
कितना मूर्ख हो चुका, यह आज का इंसान है॥
कितनी भारी भूल हुई थी, क्या दिलों ने ठान लिया।
जब इस देश के लोगों ने पत्थर को ईश्वर मान लिया॥

(सत्यपाल पथिक)

भेंटकर्ता : सूबेदार करतारसिंह आर्य 'सेवक'
आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक कार्यालय में आर्य बन्धुओं की सुविधाओं को देखते हुए सभा ने अपना निजी फेसबुक **'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा'** व ट्वीटर अकाउंट **'आर्य प्रतिनिधि सभा'** तैयार किया है जिससे आर्य महानुभावों को भविष्य में काफी सहयोग मिलेगा।

संपर्क सूत्र :- मंजीत-मो० 9812611701 —सभामन्त्री

thearyasamaj.org

धर्म का निर्णय सड़कों पर नहीं होता

❑ पण्डित इन्द्रजित्देव

'पीके' नामक एक हिन्दी फिल्म आज-कल हलचल मचा रही है। समाचार-पत्रों में छप रहे समाचारों के अनुसार सिनेमाघरों के भीतर भीड़ है व बाहर कुछ हिन्दूवादी लोग विरोधी प्रदर्शन कर रहे हैं। प्रदर्शनकारी लोगों का कहना है कि इस फिल्म में हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ किया गया है। उनका यह भी कहना है कि फिल्म में हिन्दू देवताओं का अपमान किया गया है। यह समाचार भी पढ़ने में आया है कि भारत में बनी आज तक की सभी फिल्मों की आय की सीमा की यह फिल्म पार कर गई व दर्शक अभी भी इसको देखने के लिए सिनेमाघरों की ओर भारी संख्या में जा रहे हैं।

एक प्रसिद्ध पत्रकार के अनुसार इस में ईश्वर के अस्तित्व को नकारा नहीं गया है तथा न ही किसी देवी-देवता पर किसी प्रकार का आरोप लगाया गया है। हाँ, इसमें धर्म के नाम पर अंधविश्वासों व पाखण्डों आदि का खण्डन अवश्य किया गया है। हमने यह फिल्म नहीं देखी परन्तु जिन्होंने इसे देखा है, उनका कहना है कि यह एक प्रशंसनीय फिल्म है व समाज में इस प्रकार की फिल्में धार्मिक जागृति व सामाजिक चेतना उत्पन्न करने में बहुत सहायक हो सकती हैं। इन दर्शकों में भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता लालकृष्ण आडवाणी व बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुशील मोदी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन दोनों ने भी इस फिल्म की प्रशंसा की है। फिल्म का जिन हिन्दुत्ववादी लोगों व संगठनों द्वारा विरोध किया जा रहा है, उनमें विश्व हिन्दू परिषद्, बजरंग दल व हिन्दू जागरण मंच आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। ऐसे संगठनों के नेताओं व सदस्यों से प्रश्न स्वाभाविकत: पूछा जाता है कि वे अपने हिन्दूवादी उपरोक्त नेताओं के घरों के बाहर जाकर उनके विरुद्ध प्रदर्शन क्यों नहीं करते?

हमारा निवेदन यह है कि धर्म का तात्पर्य विकृत कर दिया गया है। धर्म को समझना अति आवश्यक है। धर्म का अर्थ सत्य ज्ञान व सत्याचरण है। धर्म का निर्णय सड़कों पर नारे लगाने व विरोध प्रदर्शन करने से नहीं हो सकता। यदि प्रदर्शनकारियों के पास फिल्म में दिखाए दृश्यों व प्रस्तुत किये गये तर्कों के विरुद्ध कुछ वैदिक व वैज्ञानिक प्रमाण व तर्क हैं तो उन्हें प्रस्तुत करने से उन्हें रोकता कौन है? एक फिल्म बनाकर दर्शकों को दिखाकर अपने हिन्दुत्व का प्रचार क्यों नहीं करते? यदि उनके पास अपने पक्ष में कुछ ठोस कथनीय है तो विरोधियों को शास्त्रार्थ हेतु चुनौती देते क्यों नहीं? ऐसे लोगों को हम स्मरण दिलाते हैं—**वादे वादे तत्त्वबोध:**। परस्पर बातचीत व शुद्ध भावना से किए गए शास्त्रार्थों से सत्य की खोज करना व इसे ग्रहण करना ही धर्म का मार्ग कहा जा सकता है। वेदों, दर्शनों, उपनिषदों, सत्यार्थ प्रकाश व अन्य ग्रन्थों में पूर्व पक्ष की शंका लिखकर उत्तर पक्ष का समाधान प्रस्तुत करने की पुरानी प्राचीन परम्परा मिलती है। राजा जनक के दरबार में ऋषि याज्ञवल्क्य ने वहां उपस्थित सभी विद्वानों को उनसे प्रश्नोत्तर करके सर्वश्रेष्ठ विद्वान् का निर्णय करने का अवसर दिया था। परिणामत: वही बड़े विद्वान् माने गए। आदि शंकराचार्य ने बौद्धों को शास्त्रार्थों से परास्त किया था। कुमारिल भट्ट ने भी बौद्ध मत को शास्त्रार्थों द्वारा ही रोका था। उदयनाचार्य ने भी अपने ग्रन्थ 'न्याय कुसुमाञ्जलि' के द्वारा ही बौद्ध विचारधारा का जोरदार खण्डन करके वैदिक धर्म की महिमा गाई थी। महात्मा बुद्ध ने वेद व शास्त्रों के नाम पर चल रहे पाखण्डों व यज्ञों में पशुबलि की प्रथा का विरोध तर्कों व प्रमाणों से उपदेश करके ही किया था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी भाषणों, शास्त्रार्थों, अपने ग्रन्थों व पत्रों द्वारा असत्य मान्यताओं, अन्धविश्वासों व पाखण्डों का निराकरण किया था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के क्रान्तिकारी ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' पर प्रतिबन्ध लगाने की मांग करने हेतु आज तक मुस्लिमों, पौराणिकों, जैनियों व ईसाइयों ने कई प्रकार के तरीके अपनाए परन्तु आर्यसमाज ने आज तक अपने विरोधियों के न तो पुतले जलाये, न सड़कों पर आकर प्रदर्शन किये तथा न ही हो-हल्ला किया है। हमने विरोधी पुस्तकों के उत्तर पुस्तकों द्वारा दिए हैं तथा मुकद्मों का सामना शालीन से न्यायालयों में ही किया व सदैव विजय प्राप्त की। महर्षि दयानन्द के जीवन काल में फिल्म कला विद्यमान न थी। भाषणों, पुस्तकों व शास्त्रार्थों के माध्यमों से ही तत्त्वबोध होता रहा। आज फिल्में भी अपनी बात कहने के लिए सशक्त व प्रभावशाली माध्यम हैं तो क्यों न इनका उपयोग लिया जाए? यही काम 'पीके' फिल्म निर्माता ने किया है तो छद्म हिन्दुत्ववादी परेशान दिख रहे हैं। यह फिल्म सच्चे हिन्दुत्व का प्रतिपादन करती है। जिन्होंने इसे देखा है, उनका कहना है कि इसमें किसी भी हिन्दुओं के कथित देवी-देवताओं की आलोचना की गई है तथा न ही ईश्वर के अस्तित्व पर कोई प्रश्न उठाया गया है। हाँ, धर्म के नाम पर फैले 'बाबावाद' एवं 'गुरुवाद' की पोल अच्छी प्रकार से खोली गई है। इसमें पाप या अपराध क्या है?

पण्डित इन्द्रजित्देव

जहाँ तक पाखण्डों व अन्ध-विश्वासों के खण्डन का प्रश्न है, हमारा निवेदन है कि इसका इतिहास बहुत पुराना है। यह काम हर सत्यवादी व न्यायकारी ने किया। किसी ने शस्त्रों से किया है तो किसी ने शास्त्रों से किया है। राम, कृष्ण, नानक, कबीर, बुद्ध, शंकराचार्य व ऋषि दयानन्द इसके प्रमाण हैं। नानक, कबीर, तुकाराम व दयानन्द के अधूरे कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक यह फिल्म अनेक पाखण्डी, स्वार्थी, अज्ञानी व ढोंगी बाबाओं द्वारा खड़े किए झूठे ईश्वरों को नंगा करने का जोरदार एवं स्तुत्य कार्य करती है। केवल हिन्दुओं के ही नहीं, इस्लाम, ईसाइयत व अन्य सम्प्रदायों के मध्य चल रहे पाखण्डों पर प्रश्न उठाए गए हैं, यह निष्पक्ष कथन उन लोगों का है, जिन्होंने यह फिल्म पूर्वाग्रह से मुक्त होकर देखी है। प्रदर्शनकारियों को पहले फिल्म देखनी चाहिए।

भारतीय संविधान के अनुसार इस फिल्म को बनाने का पूर्णाधिकार निर्माता को है व इस तथ्य को दिल्ली उच्च न्यायालय ने स्वीकार करते हुए 'पीके' फिल्म के विरोध में दायर की गई एक याचिका को निरस्त कर दिया है, जिसका प्रत्येक सत्यवादी को स्वागत करना चाहिए तथा समाज-सुधार के इस माध्यम (=फिल्म 'पीके') के मूल सन्देश का अधिकाधिक प्रचार करना चाहिए।

संपर्क-चूना भट्ठियां, सिटी सेंटर के निकट, यमुनानगर 09466123677

आर्यसमाज गोहानामण्डी के 29वें वार्षिकोत्सव का निमन्त्रण-पत्र

दिनांक 14, 15, 16, 17 फरवरी 2015 (शनिवार, रविवार, सोमवार, मंगलवार) को आर्यसमाज मन्दिर, गुढ़ा रोड, गोहाना (सोनीपत) में आयोजित किया जाएगा। वर्तमान युग का समाज पथभ्रष्ट होकर नास्तिकता और विनाश की ओर बढ़ता जा रहा है। भाँति-भाँति के घोटालों से त्रस्त मानव स्वच्छ और सुन्दर वातावरण का अभिलाषी है। यह तभी सम्भव है जब परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेदज्ञान का प्रचार-प्रसार हो। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आप सभी से निवेदन है कि सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सभी कार्यक्रमों के समय पर उपस्थित होकर धर्मलाभ उठाकर अनुगृहीत करें।

आमन्त्रित महानुभाव

- ❑ **स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती,** बरेली (उत्तर-प्रदेश)
- ❑ **श्री टिकम सिंह आर्य भजनोपदेशक,** बिजनौर (उत्तर-प्रदेश)

कार्यक्रम

14 से 16 फरवरी 2015 प्रात: 8 बजे से 11 बजे तक यज्ञ, भजन, प्रवचन। रात्रि 8 बजे से 10.30 बजे तक भजन, प्रवचन

17 फरवरी 2015 प्रात: 8 बजे से 12 बजे तक यज्ञ, भजन, प्रवचन।

निवेदक : आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।